जनवरी–जून 2017

ISSN 2349-4905

हिमांजलि

15वां अंक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005

Scanned with CamScanner

ISSN 2349-4905

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

संपादक की ओर से 7

विशेष आलेख

1. नारीवादी चिन्तन के विविध आयाम : भारतीय परिप्रेक्ष्य में 9
प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया

2. लोकतान्त्रिक देश निर्माण का सपना और नागरिक संवाद की महत्ता 13
प्रोफेसर आनंद कुमार

शोध आलेख

3. समाजवादी चिंतक डॉ० राम मनोहर लोहिया का भाषाई विमर्श 15
डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव

4. समकालीन हिन्दी उपन्यास और सांस्कृतिक संकट 33
डॉ० शिव शरण कौशिक

5. समकालीन हिंदी कहानी 47
डॉ० अखिलेश कुमार शंखधर' एवं लोड्जम रोमी देवी

6. उपन्यासकार प्रेमचंद और गाँधी प्रभाव 53
संगम वर्मा

7. महादेवी वर्मा की कवितायें : स्त्री अस्मिता की धमक 56
डॉ० रूपा सिंह

8. बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर और उनका पुस्तक प्रेम 60
मोहनदास नैमिशराय

9. उत्तर औपनिवेशवाद और निबन्धकार निर्मल वर्मा 65
पूनम सूद

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास, शिमला–171005, वेबसाइट : www.iias.ac.in

Scanned with CamScanner

ISSN 2349-4905

उत्तर औपनिवेशवाद और निबन्धकार निर्मल वर्मा

डॉ० पूनम सूद

औपनिवेशवाद एक सुनिश्चित पदावलियों में ...षित नहीं हो पाया है, महज कुछ स्थितियों है ...के संदर्भ में इसे देखने और समझने की कोशिश ...जाती है। 1950 के आसपास जब विश्वयुद्ध की ...रते हो गई थी, दुनिया के अधिकतर उपनिवेष ...निवेशिक राज्यसत्ता से औपचारिक रूप से ...त हो गए थे तब पूरी दुनिया के राष्ट्रों के बीच ...स तरह की सम्बन्ध व्यवस्था बने इसके लिए ...ाज्यवादी / पूंजीवादी देशों ने जिन तीन संस्थानों ...ा निर्माण किया उनके माध्यम से नवस्वतंत्र राष्ट्रों ...ें न केवल अर्थव्यवस्था, उनकी राजनीतिक प्रणाली ...ल्कि उनकी सोच प्रक्रिया और विकास के तरीके ...नियंत्रित करना शुरू किया। यही उत्तर औपनिवेशिक ...स्थिति थी। जिसमें नवस्वतंत्र राष्ट्रों ने मुक्ति और ...विकास का सपना देखा था। एक भारतीय होने के ...नाते भारत में इस अहंग्रस्त और आत्मखंडित यूरोपीय ...चेतना ने किस तरह भारतीय समाज और संस्कृति ...में हस्तक्षेप किया निर्मल वर्मा की इस चिंता और ...चिंतन को मुखरित करना इस शोधपत्र का विषय है। धर्म, संस्कृति, परम्परा और प्रकृति की एकतानता ...में सेंध लगाकर मनुष्य की अतिभौतिक चेतना का ...वैज्ञानिक चेतना में रूपांतरण विकास का पर्यायवाची ...बन गया है। इस 'मनुष्य' ने अपनी पूरी बौद्धिकता और वैज्ञानिक चेतना का उपयोग अपनी उन्नति के लिए किया चाहे उसे प्रकृति को निचोड कर नष्ट करना पडा और दुनिया की 'आधी आबादी' को पैरों तले कुचलना पडा। 'निर्मल' इस पूरी परियोजना को उत्तर औपनिवेशिक आधुनिकता के मुहावरे में समझते हैं और ऐतिहासिकता को इसका उपकरण मात्र मानते हैं। इसलिए वह भारतीय मनुष्य व परम्परा को समझने के लिए ऐतिहासिक चेतना की अवधारणा को नकारते हैं और काल की अवधारणा को स्थान देते हैं जहाँ अतीत और वर्तमान सहअस्तित्व में विराजमान होते हैं। उत्तर औपनिवेशवाद के इस विमर्श को निर्मल वर्मा के हवाले से रखने की विनम्र कोशिश करूगा।

इस शोध–पत्र के माध्यम से जो प्रश्न उठाए जाएंगे वह है उत्तर औपनिवेशवाद का आशय क्या है? उत्तर औपनिवेशिक चिन्तन क्या है और इसकी जरूरत क्यों है? निर्मल वर्मा के निबन्ध साहित्य के हवाले से इस विमर्श पर बात की जाएगी।

"उत्तर औपनिवेशक विमर्श वह विमर्श है जो यूरोपीय उपनिवेशों के आजाद होने के बाद स्वत्त्व की तलाश और छटपटाहट में पैदा होता है और जो किसी तरह से अपने स्वभाव को पा... में औपनिवेशिक अवशेषों को एक बडी बाधा पा... है। उत्तर औपनिवेशक विमर्श मानता है कि आज... हुए समाज किसी न किसी रूप में अब भी ... औपनिवेशिक वर्चस्व से जूझ रहे हैं और भि... हुई आजादी ने समस्याओं को हल नहीं किया ... आजाद हुए समाजों के बुद्धिजीवी वर्ग ने इस व... को अक्सर स्वीकार किया है। मजबूत किया ... अब भी 'मूलवासियों' के प्रति भेदभाव उनके

Scanned with CamScanner